खण्ड-306, अंक-1
सोमवार, 27 फाल्गुन, शक संवत् 1895
(18 मार्च, 1974 ई0)

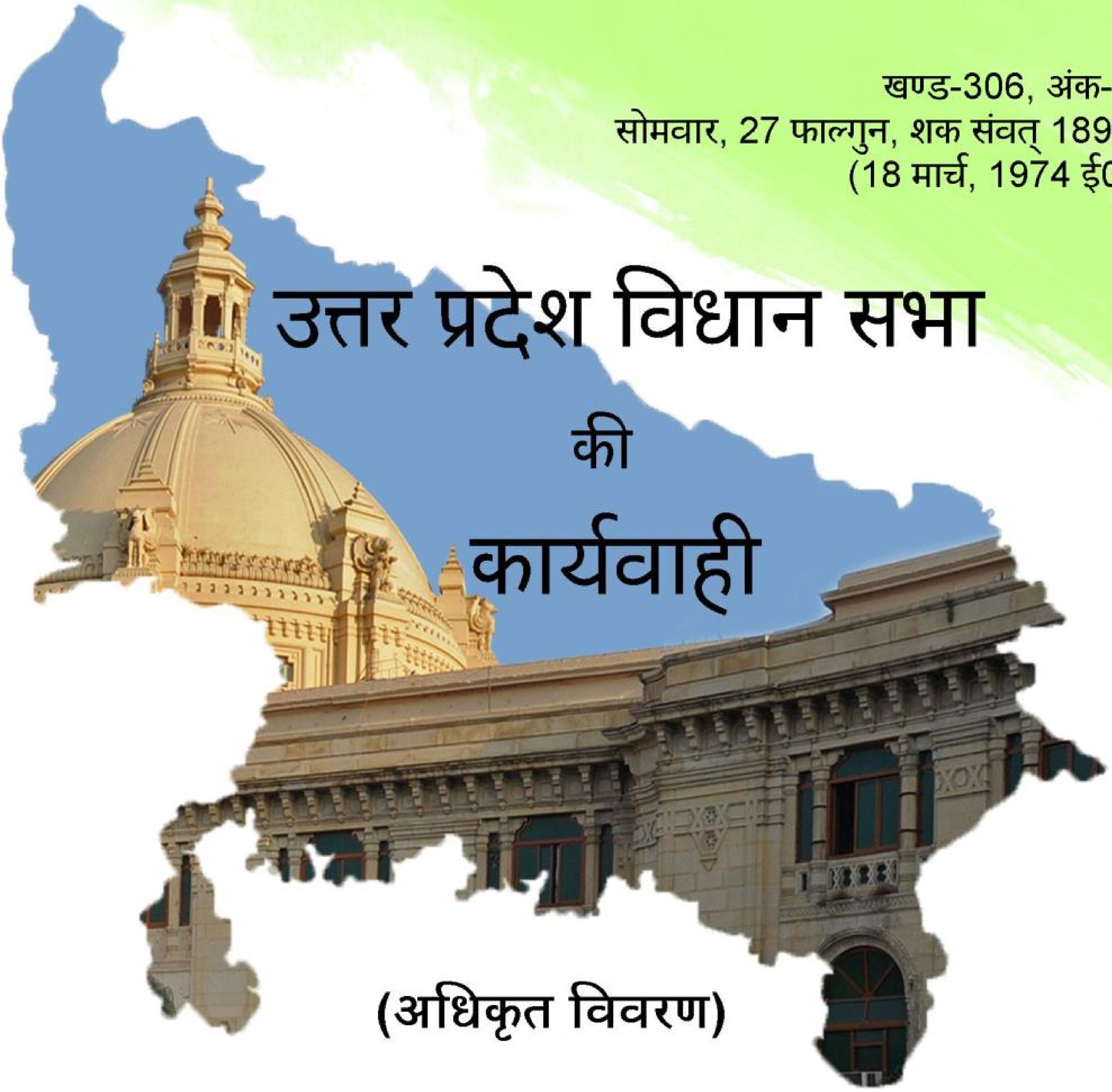

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 306 में 9 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1974

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, 18 मार्च, 1974

विधान सभा की बैठक, सभा मंडप, लखनऊ में 4.30 बजे दिन में कार्यकारी अध्यक्ष, श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य—268

अंगने लाल, श्री
अजीत प्रताप सिंह, श्री
अनवार जमील, श्री (उर्फ जिमी मियां)
अनवार मोहम्मद, श्री
अनिरुद्ध राय, श्री
अब्दुल रहमान खां नशतर, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
आगा जैदी, श्री
आबिद अली, श्री
आशा राम, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
इन्द्रमोहनी, श्रीमती
इन्द्र लाल, श्री
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए0सी0 ग्राइस, श्री
ओम प्रकाश, श्री (जिला जौनपुर)
ओम प्रकाश, श्री (जिला मिर्जापुर)
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
काशी नाथ मेहरोत्रा, श्री
काशी नाथ मिश्र, श्री
किशन लाल, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देई, श्रीमती
गंगा स्वरूप, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वरपुरी, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह, श्री (जिला अल्मोड़ा)
गोविन्द सिंह, श्री (जिला टिहरी गढ़वाल)
गौरी शंकर, श्री
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्दन सिंह, श्री
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्र पाल सिंह, श्री
चन्द्रभान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर
चरन दास सेठ, श्री
चितरंजन स्वरूप, श्री

चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (मेहनगर, जिला आजमगढ़)
जगदीश नरायन त्रिपाठी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जफर आजमी, श्री
जमुना प्रसाद, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री
जुगल किशोर, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहली, श्री
तेजनरायन त्रिवेदी, श्री
तेज बहादुर, श्री
त्रिवेनी, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दुर्योधन, श्री
दुलारा देवी, श्रीमती
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
नन्हें लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण सिंह, श्री
निर्भय नरायन सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)
निसार अहमद अंसारी, श्री
पुरुषोत्तम, श्री (जिला मिर्जापुर)
पुरुषोत्तम लाल, श्री (उर्फ राजा जी)
पूरन चन्द, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला एटा)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभू दयाल, श्री
प्रियदर्शी जेटली, श्री
प्रेम दत्त, श्री
फजलुररहमान, श्री
बंशीधर, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबू सिंह, श्री
बालकृष्ण सनवाल, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीखा लाल, श्री
भृगुनाथ, श्री
भूप सिंह कन, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खां)
मन्ना लाल, श्री
मलखान सिंह, श्री (जिला जालौन)
मलखान सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महाबीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
महेन्द्र सिंह, श्री
महेश सिंह, श्री
माखन लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मुंशी लाल, श्री
मुन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मुमताज मोहम्मद खां, श्री
मुलतान सिंह, श्री
मुहम्मद मसूद, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मूल चन्द, श्री
मेघनाथ सिंह, श्री
मोहम्मद असलम, श्री

मोहम्मद महमूद अली खाँ, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ ललन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुनाथ सिंह, श्री
रघुबीर, श्री
रघुबीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणंजय सिंह, राजा
रफी उल्ला, श्री
रमा, कुमारी
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राज किशोर, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजपाल, श्री
राजबहादुर, श्री
राजबहादुर चन्द, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राज मंगल पांडेय, श्री
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र सिंह, चौधरी,
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधा चरण, श्री
राम आधार, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
राम चन्द्र बक्श सिंह, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम राय, श्री
राम जी, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामजी लाल सेन, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
राम देव यादव, श्री
राम पति, श्री
राम पाल सिंह, श्री
राम पाल सिंह यादव, चौधरी
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्यारे, श्री
राम प्रकाश, श्री
राम बचन, श्री
राम मूर्ति, श्री
राम रतन सिंह, श्री
रामरती, श्रीमती (जिला वाराणसी)
राम लाल राही, श्री
राम शिरोमन दूबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ, श्री
राम सुन्दर पांडेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम सेवक यादव, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लालू राम, श्री
वासुदेव सिंह, श्री
विक्रम सिंह, श्री
विजय कुमार, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विमल प्रसाद, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शिव कुमार पांडेय, श्री
शिव चरन लाल, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिव लाल, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिव सम्पत्ति, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्री नारायण प्रसाद, श्री (उर्फ भुलई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
श्रीश चन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द, श्री

सत्तार अहमद, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्यवीर, श्री
सन्तोष कुमारी, श्रीमती
सरस्वती टम्टा, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सलाहउद्दीन, श्री (उर्फ नब्बन)
सुक्खन सिंह, श्री
सूखदा मिश्रा, श्रीमती
सुखदराज सिंह, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुरेन्द्र सिंह, श्री
सुलतान सिंह, श्री
सूबेदार, श्री
सोहन लाल बुसिया, श्री
स्वरूप कुमारी बक्शी, श्रीमती
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल, श्री
हरिराम, श्री
हरीश कुमार गगवार, श्री
हरीश चन्द्र खण्डलवाल, श्री
हुकुम सिंह, श्री
हुब राज, श्री

नोट:—लघु उद्योग मंत्री श्री इस्तफा हुसेन तथा चिकित्सा मंत्री श्री सालिग राम जायसवाल भी उपस्थित थे ।

अध्यक्ष पद पर कार्य करने हेतु श्री शांति प्रपन्न शर्मा, सदस्य विधान सभा की श्री राज्यपाल द्वारा नियुक्ति की सूचना

सचिव, विधान सभा—

सदन में पीठासीन होने के सम्बन्ध में भारत के संविधान के अनुच्छेद 180(1) के अन्तर्गत श्री राज्यपाल द्वारा श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा को कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने के सम्बन्ध में जो आदेश प्राप्त हुये हैं, वह इस प्रकार है :

"उत्तर प्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष का पद रिक्त है और उसके अध्यक्ष का पद भी उक्त सभा के दिनांक 18 मार्च, 1974 के उपवेशन के प्रारम्भ के तुरन्त पूर्व रिक्त हो जायेगा ।

अतः "भारत का संविधान" के अनुच्छेद 180 के खंड (1) द्वारा मुझे प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करके मैं, अकबर अली खां, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा, सदस्य, विधान सभा, जो उक्त उपवेशन के प्रारम्भ से उस समय तक के लिये जब तक कि संविधान के अनुच्छेद 178 के उपबन्धों के अनुसार विधान सभा द्वारा अध्यक्ष का निर्वाचन न कर लिया जाय, अध्यक्ष पद का कार्य करने के लिये नियुक्त करता हूं । "

बिना शपथ ग्रहण किये सदस्यों के सदन में बैठने के सम्बन्ध में चेतावनी

कार्यकारी अध्यक्ष—

इसके पहले कि मैं सदन की कार्यवाही प्रारम्भ करूं, मैं सदन के उन माननीय सदस्यों से, यदि कोई हों, जिन्होंने शपथ ग्रहण नहीं की या प्रतिज्ञान नहीं किया, प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे कृपया सदन छोड़कर बाहर चले जायं क्योंकि वे संविधान के अनुच्छेद 193 के अन्तर्गत 500 रु0 प्रति दिन के हिसाब से दंड के भागी होंगे । उन्हें बिना शपथ लिये सदन में बैठ रहने का अधिकार नहीं है ।

कुंवर श्रीपाल सिंह (जिला सुल्तानपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक व्यवस्था का प्रश्न है...

कार्यकारी अध्यक्ष—

अभी सदन की कोई कार्य वाही प्रारम्भ नहीं हुई, इसलिये व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठता ।

कुंवर श्रीपाल सिंह—

जो प्रक्रिया होने जा रही है उसी के सिलसिले में व्यवस्था का प्रश्न है । जैसा आपने कहा कि जिन माननीय सदस्यों ने शपथ ग्रहण नहीं की वे सदन छोड़कर चले जायं, इस सम्बन्ध में मैं इतना और जोड़ देना चाहता हूं कि जिन लोगों ने संविधान में निहित प्रक्रिया के अनुसार शपथ नहीं ली है । उनके लिये आप क्या कहते हैं जिन्होंने खुदा की कसम खाई है जो कहीं वर्णित नहीं है । इस पर मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं कि क्या वह शपथ सही है ?

कार्यकारी अध्यक्ष—

यह तो "एलाउ" कर दिया गया है ।

कुंवर श्रीपाल सिंह—

कहां "एलाउ" कर दिया ? संविधान में तो है नहीं । अगर कोई रूलिंग हो, तो वह बताने का कष्ट करें ।

विधान सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन

कार्यकारी अध्यक्ष—

उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली, 1958 के नियम 8 के उप नियम (1) के अन्तर्गत श्री राज्यपाल ने अध्यक्ष के निर्वाचन के लिये आज 4·30 अजे अपराह्न का समय नियत किया था । उक्त नियम के उप नियम (2) के अन्तर्गत अध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिये नाम-निर्देशन पत्र कल 17 मार्च, 1974 को मध्याह्न के पूर्व तक दिये जा सकते थे । निर्धारित समय के भीतर चार नाम-निर्देशन पत्र प्राप्त हुये हैं जिन सब में श्री वासुदेव सिंह का नाम प्रस्तावित किया गया है । इनका प्रस्ताव सर्वश्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, चरण सिंह, माधव प्रसाद त्रिपाठी तथा नारायण दत्त तिवारी द्वारा किया गया है और इन प्रस्तावों का समर्थन क्रमशः श्रीमती सरस्वती टमटा, श्री लक्ष्मी शंकर यादव, श्री चन्द्रशेखर सिंह तथा श्री नियाज हसन खां द्वारा किया गया है । चूंकि एक ही नाम का प्रस्ताव है इसलिये मतदान का प्रश्न नहीं उठता । अतः मैं श्री वासुदेव सिंह को अध्यक्ष पद के लिये निर्विरोध निर्वाचित होने की घोषणा करता हूं ।

इसके पहले कि मैं नेता सदन और नेता विरोधी दल से यह प्रार्थना करूं कि वे श्री वासुदेव सिंह को अध्यक्ष पीठ पर लाकर आसीन करायें, मैं नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता जनसंघ श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी तथा नेता कांग्रेस संगठन को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने एक परम्परा डालकर निर्विरोध चुनाव करके इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है । मैं श्री वासुदेव सिंह को भी बधाई देना चाहता हूं कि क्योंकि पिछली दफा यह उपाध्यक्ष थे और उनके कार्य करने की शैली को देखते हुये सभी लोगों ने यह उचित समझा कि उनको अध्यक्ष पद के लिये चुना जाय । मैं श्री नारायण दत्त तिवारी और नेता विरोधी दल से प्रार्थना करूंगा कि हमारे जो नये अध्यक्ष हैं, जो कहीं इस सदन में छिपे बैठे हैं, उनको ढूंढ़ कर यहां लाने की कृपा करें ।

(कार्यकारी नेता सदन तथा नेता विरोधी दल ने भी अध्यक्ष को उनके आसन तक पहुंचाया)

अध्यक्ष पद पर निर्वाचित श्री वासुदेव सिंह को बधाई

वित्त मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

सम्मानित अध्यक्ष महोदय, मैं आपको इस सम्मानित सदन की ओर से इस सबसे महत्व पूर्ण पद पर आसीन होने और अध्यक्ष पद स्वीकृत करने के अवसर पर हार्दिक बधाई देना अपना कर्तव्य समझता हूं । श्रीमन्, जहां मेरा यह कर्तव्य है कि मैं आपका अभिनन्दन करूं वहीं मैं नेता विरोधी दल, नेता जनसंघ दल, नेता कांग्रेस संगठन दल, नेता समाजवादी दल और अन्य दलों को भी बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने आपका सर्वसम्मत चुनाव करने में जो परम्परा सन् 1969 में रखी गयी थी उसका पुनः निर्वहन किया । मेरे विनम्र विचार में आज छठवीं विधान सभा की कार्यवाही के आरम्भ में यह सबसे सुखद् परिच्छेद है और मुझे विश्वास है कि आपका इस प्रकार सर्वसम्मत निर्वाचन कर हमने इस विधान सभा की कार्यवाही को इस सदन की परम्परा और मर्यादा के अनुसार आगे बढ़ाये रखने और पुरानी परम्पराओं को अवाध गति से करने का दृढ़ संकल्प घोषित किया है ।

श्रीमन्, आपसे यह सदन पिछले पांच वर्षों से उपाध्यक्ष के रूप में आपके व्यक्तित्व, आपकी कर्मठता व पार्लियामेन्टरी पद्धति के सम्बन्ध में आपकी विलक्षण रूलिंग देने की क्षमता से भली भांति परिचित है । जब 1953 में प्रतापगढ़ नगरपालिका के आप अध्यक्ष थे उस समय से ही समाजवाद से ओतप्रोत व्यक्तित्व की छाप आपके मानस पटल पर रही है । समाजवादी विचारधारा के अन्तर्गत जो आपने संघर्ष किया उससे भी हम सभी भली भांति परिचित हैं। पार्लियामेन्टरी पद्धति में आपका जो अटूट विश्वास रहा है और प्रजातांत्रिक समाजवाद में आपका जो विश्वास रहा है उसका भी आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ा है। विभाजन के अवसर पर आपने जिस प्रकार शरणार्थियों की मदद की और स्वयं चालक बनकर हवाई जहाज चलाने में सहायता कर उन मर्मान्तिक दिनों में त्रस्त मानव की सहायता की वह सब भी आपके जीवन की एक झांकी प्रतिबिम्बित करता है ।

श्रीमन् हमारे पक्ष को, सम्पूर्ण सदन को यह विश्वास है कि आपके अध्यक्ष काल में यह सदन अपनी प्रजातंत्र में आस्था को और गहराई के साथ परिलक्षित करेगा और पार्लियामेन्टरी पद्धति की प्रक्रिया को निभायेगा । श्रीमन् मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं हमारा पक्ष संसदीय मान्यताओं, लोकतंत्रीय नियमों और हमारे इस सदन के नियमों को प्रतिष्ठापित करने में सदैव आपका सहायक होगा और आपके मार्ग-दर्शन में चलने की चेष्टा करेगा । इन शब्दों के साथ श्रीमन् मैं पुनः आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं ।

***चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—**

अध्यक्ष महोदय, मैं भी उपनेता सदन के साथ आपको बधाई देना चाहता हूं । मुझे आपके साथ रहने का उस प्रकार का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है जैसा कि श्री तिवारी जी को हुआ है । मुझे तो 5 साल में आपका जो उपाध्यक्ष की हैसियत से काम था वही देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । मैं यह उम्मीद करता हूं कि स्पीकर का जो सबसे बड़ा कर्तव्य है कि ट्रेजरी बन्चेज और अपोजीशन बेन्चेज, सरकारी बेन्चेज और विरोधी पक्ष की जो बेन्चेज हैं, उसको तराजू में बराबर तौलकर रखना । मनुष्य का स्वभाव है कि जिसके हाथ में बहुमत होता है, वह जाने और अनजाने भी विपक्ष या कमजोर दल के अधिकारों पर अतिक्रमण कर जाता है । उस समय एक पंच की आवश्यकता होती है और सदन में यह जिम्मेदारी स्पीकर की होती है। तो मैं यह उम्मीद करता हूं कि आपके हाथों या आपके जरिये इस सदन की गरिमा बढ़ेगी और अपोजीशन के अधिकारों की रक्षा होती रहेगी ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हमारे यहां कई कारणों से प्रजातंत्र में खतरा पैदा हो रहा है । जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, हमारा स्वप्न कि हमारा देश दुनियां में जनतंत्र की मिसाल कायम करगा, वह धीरे-धीरे धूमिल होता जा रहा है । हम इसके कारणों का जिक्र नहीं करना चाहते हैं लेकिन इसमें दो रायें नहीं हो सकती है कि सारे देश की यही स्थिति है । मैं परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूं कि हमारे प्रदेश में वैसी स्थिति न आने पावे । वह स्थिति आवेगी या नहीं, यह बतलाना विपक्ष के हाथ में भी नहीं है । उसके लिये बहुत सी परिस्थितियां और कारण होंगे । लेकिन मुझे यह विश्वास है कि जहां तक आपका सम्बन्ध है आप अपनी भूमिका निहायत इमानदारी और निष्पक्षता के साथ अदा करेंगे । यह बात मैं अपने पिछले अनुभव के बल पर अर्ज कर रहा हूं । इन शब्दों के साथ जो तिवारीजी ने फर्माया है, उससे मैं भी अपने आपको सम्बद्ध करता हूं । मैं विरोधी पक्ष की तरफ से आपको बधाई देता हूं और अपनी बधाई फिर दोहराता हूं ।

*श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)---

मान्यवर, मैं इस पद पर आपको निर्विरोध चुने जाने के लिये अपने और अपने दल की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और आपका स्वागत करता हूं । यह एक बड़े गौरव की बात है कि विरोधी पक्ष ने आप में अटुट विश्वास प्रकट किया है । इससे आपका दायित्व बढ़ जाता है । मुझे विश्वास है कि आप इस पद की गरिमा की रक्षा करेंगे ।

साथ ही मैं दो शब्द और कहना चाहता हूं । मान्यवर, आज की परिस्थितियां एक विशेष रूप धारण कर रही है । प्रजातंत्र हम लोगों की दृष्टि में लड़खड़ाता हुआ दिखलाई दे रहा है । संसदीय प्रणाली की जड़ें भी विपक्षी दल की नजर में हिलती हुई दिखलाई देती हैं । हवा इस तरह की है कि कहीं अधिनायकवादी प्रवत्तियां सिर न उठावें ।

इसका भय है और बड़ा स्वाभाविक है कि विपक्षी दल अपने हितों की रक्षा के लिये सशंकित हो और इसके लिये उसने आपमें विश्वास प्रकट किया है । मुझ ऐसा विश्वास है कि आप उसके हितों की रक्षा करेंगे। प्रजातंत्र में जिस प्रकार उसका एक पहिया सरकार है तो दूसरा पहिया विरोधी पक्ष है, बिना विरोधी पक्ष के सरकार चल नहीं सकती, इसलिये उसके हितों की रक्षा करना आवश्यक है ।

मान्यवर, आपका यह आसन विक्रमादित्य के उस आसन के समान है जिसमें यही नहीं होता था कि न्याय किया जाय बल्कि ऐसा प्रतीत भी होता था कि सबके साथ समान रूप से न्याय हो रहा है । मान्यवर, मैं आशा करता हूं कि विरोधी पक्ष की जो सही भूमिका है प्रजातंत्र में सजग प्रहरी के रूप में अदा करने की उसको अदा करने का आप अवसर देंगे । विरोधी पक्ष का काम विरोध करना ही है और उसका अल्पमत में रहने के कारण यह स्वाभाविक है कि वह आपसे यह आशा करे कि आप उसके हितों की रक्षा करें और उसकी जो आशंकायें हैं उनको दूर करें । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप विरोधी पक्ष के हितों की रक्षा करेंगे और जब आप उपाध्यक्ष थे उस समय जो आपने मूल्य निर्धारित किये थे उन्हीं आधारों पर हमने इस समय आपमें अपना विश्वास प्रकट किया है और हमारा ऐसा विश्वास है कि हमारा वह विश्वास सही उतरेगा । मैं अपने दल की तथा अपनी ओर से आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस प्रजातांत्रिक प्रणाली की रक्षा करने के लिये जो भी अंशदान विरोधी पक्ष की ओर से होता है वह हम आपको देते रहेंगे और परमात्मा आपको उसे पूर्ण करने में मदद दे ।

श्री भीखा लाल (जिला उन्नाव)--

अध्यक्ष महोदय, आपके सदन की ओर से इस महत्वपूर्ण पद पर निर्विरोध निर्वाचित होकर आसीन होने के लिये मैं अपनी ओर से और अपने कम्युनिस्ट विधायक दल की ओर से आपको

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री भीखा लाल]

बधाई देता हूं । आप जिस पद पर आसीन हुये हैं उस आसन से इस प्रदेश में बहुत ही गौरवशील परम्परायें स्थापित हुई हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप उन परम्पराओं को आगे बढायेंगे और नये मूल्यों का सृजन करेंगे । मैं यह भी जानता हूं कि आपको बहुत ही कठिन परिस्थितियों में से गुजरना होगा और बहुत से ऐसे मौके आयेंगे जबकि आपके सामने काफी कठिनाइयां उपस्थित होंगी, लेकिन मुझे यह भी यकीन है कि आप दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर जैसा कि आपने पहले भी अध्यापक की हैसियत से किया है इस सदनकी गरिमा को आगे बढायेंगे और नये मूल्यों को सृजन करने में आगे रहेंगे ।

मान्यवर, आज जैसी प्रदेश की स्थिति है प्रदेश के मेहनतकश लोग, मजदूर, हरिजन, दलित और पीड़ित लोगों की अनेक समस्यायें हैं । जाहिर है सदन के माध्यम से उन समस्याओं को हल करने के प्रश्न उठेंगे, चर्चायें आयेंगी और मुझे पूर्ण आशा है कि उन समस्याओं को हल कराने में हमको आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा । मैं अपने दल की ओर से आपको पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि सदन को नियमानुसार चलाने में इस सदन की जो गरिमा है उसको आगे बढ़ाने इस पद का जो महत्व है उसको ऊंचा उठाने में तथा इस प्रदेश में नई परम्पराओं तथा नये मूल्यों के सृजन करने में मेरे दल की ओर से आपको सदैव सहयोग प्राप्त होता रहेगा । इन शब्दों के साथ मैं आपको पुनः बधाई देना चाहता हूं कि उपनेता सदन और नेता विरोधी दल ने जो विचार प्रकट किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

*श्री राम मूर्ति (जिला बरेली)---

महोदय, हम सब बड़े प्रसन्न हैं और हमें खुशी है कि आप इस सदन के अध्यक्ष निर्विरोध और सब सम्मति से चुने गये हैं । आप इसी विधान सभा की उसी कुर्सी में पहले भी बैठे हैं आपने डेमोक्रेटिक कन्ट्रीज की प्रोसीडिंग्स का अध्ययन कर तजुर्बा हासिल किया है और बड़ी खूबसूरती के साथ आपने इस सदन की प्रोसीडिंग्स को कन्डक्ट किया है । इसी वजह से सदन के लोगों ने आपकी इज्जत की ओर आपके प्रति श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न हुआ ।

मान्यवर, यह बात आपसे भी छिपी नहीं है कि हमारा मुल्क और प्रदेश एक बड़े नाजुक और मुश्किल वक्त से गुजर रहा है । आज सर्वसाधारण को अपनी जिन्दगी गुजर करना बड़ा मुश्किल और दूभर हो गया है । चीजों की महंगाई काफी हद तक बढ़ गई है । वितरण व्यवस्था ठीक नहीं है । प्रत्येक चीज का अभाव हो गया है । ऐसी हालत में हमारा प्रदेश पिछड़ गया है । हम लोग यहां पर आकर अपनी भावनायें व्यक्त करते हैं कि प्रदेश की क्या हालत हो रही है । आज सही माने में देखा जाय तो हम बेबसी के आलम में हैं । मुझे इसी पर एक शेर याद आता है---

इस किश्ती हयात को ले जायें हम किधर,
नजरों के सामने कोई साहिल नजर नहीं आता ।

आज ऐसी हालात पैदा हो गये हैं । अगर सरकार की तरफ से कभी सदस्यों का गला घोटने की कोशिश होती है तो दलों के अन्दर हिन्सा की भावना पैदा हो जाती हैं । अभी आपने देखा कि पिछले दिनों गुजरात में किस हद तक हालात बिगड़ गये थे । वहां की असेम्बली ने सरकार का चलना मुश्किल कर दिया । नतीजा यह हुआ कि हिन्सायें हुई, लोगों की जानें गये और कई अन्जाम उसके हो गये । किसी हद तक उनको सफलता भी मिली । मैं समझता हूं कि हमारी सरकार प्रदेश के लिये सहारा होगी । हम लोग यहां पर इसलिये आये हैं कि हमारे प्रदेश का भविष्य उज्जवल हो । आपके रहते हुये हमें खुशी है कि आप हमारी प्रोसीडिंग्स को अच्छी तरह से चलायेंगे । आप पर हर आदमी को विश्वास है । सदन के अन्दर ही नहीं बल्कि सदन के बाहर भी आप हमें गाइडेन्स देते रहेंगे ।

---

*वक्त ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मैं आपके दिल और दिमाग का कैसे बयान करूं । दर्शक के रूप में मुझे भी कभी आपका कार्य देखने को मिला और मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि मुश्किल के वक्त में आपने अपनी पार्टी का ध्यान नहीं दिया और रूलिंग दी । आप जिस स्थान पर बैठे हुये हैं वह पंचायती राज की गरिमा और महिमा का सच्चा प्रतीक है । माननीय सदस्यों ने आपको चुनकर अपने मन म विश्वास पैदा किया है कि आप आजादी के साथ अपनी बात रखते हैं और उसकी जिम्मेदारी महसूस करते हैं। जो नये मेम्बरान यहां पर चुनकर आये हैं उनका आप उचित मार्ग-दर्शन करेंगे। मुझे पूरी उम्मीद है कि आपके द्वारा जनतान्त्रिक की परम्पराओं की रक्षा होगी । हम सब लोग जो यहां चुनकर आये हैं, यही तमन्ना रखते हैं कि हमारे प्रदेश के लोग सुखी हों, खुशहाली आवे, समृद्धिशाली लोग हमारे यहां ज्यादा बनें, उसी के लिये हम सब की कामना है और हम कोशिश भी करते हैं । उसी ख्याल से कभी-कभी कुछ तल्खी भी पैदा हो जाती है । किसी की यह इच्छा नहीं होती कि यहां पर किसी तरह की गड़बड़ी पैदा करें । यदि ऐसी कोई बात होती है तो हम समझते ह कि आपके जरिये हमारी परम्पराओं की रक्षा होगी और हम सबकी रक्षा होगी । हमें पूरी उम्मीद है कि जो हमारी इच्छायें व कामनायें हैं वे सफल होंगी । अन्त में मैं पुनः फिर एक बार अपनी तरफ से आपको बधाई देता हूं और आपका अभिनन्दन करता हूं ।

*कुंवर शिवनाथ सिंह "कुशवाहा" (जिला कानपुर)--

मान्यवर, आज सारे के सारे दलों की तरफ से अध्यक्ष पद के लिये एकमत से सर्वसम्मत जो श्रीमान का निर्वाचन हुआ, उसके लिये मैं अपनी तरफ से और अपने दल सोशलिस्ट पार्टी की तरफ से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं । श्रीमन्, किसी पद का मिल जाना तो कोई विशेष बात नहीं होती लेकिन उस पद का निर्वाहन करना बड़ा मुश्किल होता है । मेरा विश्वास है कि आप अपने पद का निर्वहन बड़े ही मर्यादित ढंग से करेंगे ताकि तमाम माननीय सदस्य जो अपने-अपने विचार लेकर इस सदन में निर्वाचित होकर आये हैं उनका भी यह ख्याल हो कि आप उन सब की भावनाओं का आदर करते हुये अपनी उचित व्यवस्था देंगे जिससे अपनी बातों को यहां अच्छी तरह से कह सकें । हम लोग खासतौर से जो विरोधी दल के लोग हैं, हमारा पुराना तजुर्बा है कि हमेशा विरोधी दल के लोगों के साथ कुछ दल विशेष की भावना में आकर कुछ बातें हो जाया करती हैं । हम ऐसा विश्वास करते हैं, जैसा कि हम आप से पूर्व परिचित हैं और आपसे हमारा राजनीतिक लगाव भी रहा है, हम विरोधी दल के लोगों के लिये आप सजग प्रहरी होंगे जिससे हम अपनी भावनाओं को इस विधान सभा में अच्छी तरह से व्यक्त कर सकें । एक बार मैं पुनः अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से श्रीमान का अभिनन्दन करता हूं ।

श्री अध्यक्ष--

माननीय कार्यकारी नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता जनसंघ, माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी, संगठन कांग्रेस तथा सोशलिस्ट पार्टी तथा सदस्य गण । एक स्वस्थ परम्परा आपने डाली कि अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ । लोकतंत्र की पद्धति को संपुष्ट करने का यह एक अचूक कदम है और मैं समझता हूं कि जो पीठासीन अधिकारी हो, वह अपने निर्णय में पूर्णतः स्वतंत्र है और निष्पक्षता और निर्पेक्षता का प्रदर्शन करे । माननीय कार्यकारी नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल व अन्य दल के नेताओं ने जो भाव व्यक्त किये हैं और मुझमें विश्वास प्रकट किया है मेरा प्रयत्न होगा कि मैं उनके विचारों, भावों और उनकी आशाओं के अनुरूप कार्य करूं विचारों की अधिकतम अभिव्यक्ति का यह

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री अध्यक्ष]

स्थल है और कई उग्र विचारों की अभिव्यक्ति की भी यह विधान सभा उपयुक्त स्थल है और जो आपने आशा लगाई है, मेरा प्रयत्न होगा कि उसको अपने सीमित अधिकारों के परिवेश में पूरा करूं ।

अभी उपाध्यक्ष का भी चुनाव होना है । जैसा कि पिछली बार आपने किया था वैसा ही आप यदि करें तो बहुत अच्छा होगा । इस सदन को सहयोग की भावना से बल मिल सकता है । हमारे और आपके बीच में सहयोग और सरकार तथा विरोध के बीच में सहयोग होना चाहिये । मैं निर्णय में अपनी बुद्धि के अनुसार, जैसी कि नियमों की और संविधान की मुझे जानकारी है, जैसी कि लोकपद्धति की मुझे जानकारी है, उसके अनुसार कार्य करने का प्रयास करूंगा ।

मैं आपको नेता सदन, नेता विपक्ष, नेता जनसंघ, नेता कांग्रेस संगठन तथा नेता कम्युनिस्ट पार्टी को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि कभी भी मेरे निर्णयों में पक्षपात का पुट नहीं होगा। मैं सदन के माननीय नेताओं को आश्वस्त करूंगा। स्वस्थ परम्परा का तकाज है कि अत्यधिक उत्तेजना के वातावरण में आपस में सहयोग करना चाहिये । जहां शासन को अधिकार प्राप्त है, बहुमत को अधिकार प्राप्त है वहां विरोधी पक्ष को भी अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने का अधिकार प्राप्त है और सहयोगपूर्ण वातावरण से विधान सभा के कार्य को सफल करने की कामयाब कोशिश हो सकती है । अधिक मैं कहना नहीं चाहता हूं ।

यह आज का तकाजा है और मैं समझता हूं कि हम और आप एक दूसरे के अधि नजदीक काम के आधार पर ही आयेंगे और यह विधान सभा जो देश की सबसे बड़ी विधान सभा है और लोक सभा के बाद सबसे अधिक संख्या वाली विधान सभा है, उसकी मर्यादा और परम्परा को हम सम्बर्द्धित करेंगे कि इस सदन की गरिमा सारे देश के परिवेश में बलशाली हो और दूसरे हमारे देश के प्रदेश हमारा अनुकरण करें ।

मैं अभी यह कह सकता हूं कि जो परम्परायें पिछली विधान सभा में कायम करने की हमने कोशिश की थी, नेता सदन और अन्य दल के नेताओं के सहयोग से उनको कायम करने में हम सफल होंगे । मैं उपाध्यक्ष पद के बारे में कहना चाहता हूं कि शासक दल का अगर अध्यक्ष हो तो विरोधी पक्ष का उपाध्यक्ष होना चाहिये और मुझे ऐसा लगता है कि इसके लिये सहमति होनी चाहिये और है भी ।

मुझे आशा है कि इस सदन का काम सहयोग से अच्छा चलेगा । मैं इन शब्दों के साथ नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे आज अध्यक्ष के पद के लायक समझा । यह उनकी उदारता है । मैं सभी दलों के नेताओं को धन्यवाद देता हूं और जो माननीय सदस्य आज यहां नये आये हुये हैं मैं उनका स्वागत करता हूं और अभिनन्दन करता हूं । जो पुराने सदस्य लौटकर आये हैं उनका भी स्वागत करता हूं और उनको धन्यवाद देता हूं । मैं प्रत्येक सदस्य को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने यहां पर एक नया रास्ता आज प्रशस्त किया है और यही क्रम आगे भी बढ़ेगा और इससे दूसरे प्रदेशों को प्रेरणा मिलेगी ।

इन शब्दों के साथ मैं आप लोगों को धन्यवाद देता हूं और अपना आभार प्रकट करता हूं ।

अब हम कल उठते हैं और कल दिनांक 19 मार्च, 1974 को 11 बजे पूर्वान्ह माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के लिये पुनः एकत्र होंगे ।

(इसके बाद सदन 5 बजकर 10 मिनट पर अगले दिन के . . . . लिये स्थगित हो गया ।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ:
दिनांक: 18 मार्च, 1974 ई0।

पी0 एस0 यू0 पी0—ए0 पी0—9 वि0 सभा0—एम0 सी0 नं0 0337—1974—835.